सूरह — एक कहानी

सूरह अस-सजदह

सजदा

पूरा सफ़र — वो पहलू जो बिस्तरों को छोड़ देते हैं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 32 • 30 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्लज़ी अह्सन कुल्ल शै-इन ख़लक़ह
7. वो जिसने हर चीज़ को जो बनाया उसे बेहतरीन बनाया।

ततजाफ़ा जुनूबुहुम 'अनिल्-मज़ाजि'इ यद्'ऊन रब्बहुम ख़ौफ़ंव्-व तम'आ
16. उनके पहलू बिस्तरों से जुदा हो जाते हैं, वो अपने रब को ख़ौफ़ और उम्मीद से पुकारते हैं।

फ़-ला तअ्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़िय लहुम्-मिन क़ुर्रति अअ्युन
17. तो कोई जान नहीं जानती उसके लिए आँखों की कैसी ठंडक छुपा कर रखी गई।

व ल-नुज़ीक़न्नहुम्-मिनल्-'अज़ाबिल्-अद्ना दूनल्-'अज़ाबिल्-अक्बरि ल'अल्लहुम यर्जिऊन
21. और हम उन्हें बड़े अज़ाब से पहले क़रीबी अज़ाब चखाएँगे, ताकि वो लौट आएँ।

व ज'अल्ना मिन्हुम अइम्मतंय्यह्दून बि-अम्रिना लम्मा सबरू
24. और हमने उन में लीडर बनाए जो हमारे हुक्म से हिदायत देते थे, जब उन्होंने सब्र किया।

अ व लम यरौ अन्ना नसूक़ुल्-मा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि
27. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी ले जाते हैं?

उसने हर चीज़ को बेहतरीन बनाया

बेटा, ये सूरह 'अलिफ़ लाम मीम' और एक एलान से खुलती है: '**तन्ज़ीलुल्-किताबि ला रैब फ़ीहि मिर्-रब्बिल्-'आलमीन** — इस किताब का नुज़ूल, **जिसमें कोई शक नहीं**, जहानों के रब की तरफ़ से।'

और फिर ये उनके इल्ज़ाम का जवाब देती है: '**अम यक़ूलूनफ़्-तराह** — या वो कहते हैं: उसने इसे घढ़ा? **बल हुवल्-हक़्क़ु मिर्-रब्बिक** — बल्कि, ये तुम्हारे रब की तरफ़ से **हक़** है — **लि-तुन्ज़िर क़ौमम्-मा अताहुम्-मिन्-नज़ीरिम्-मिन क़ब्लिक ल'अल्लहुम यह्तदून** — ताकि तुम एक ऐसी क़ौम को ख़बरदार करो जिनके पास तुम से पहले कोई डराने वाला न आया, ताकि वो हिदायत पाएँ।'

फिर अल्लाह अपनी तदबीर बयान करते हैं: '**युदब्बिरुल्-अम्र मिनस्-समा-इ इलल्-अर्ज़ि सुम्म यअ्रुजु इलैहि फ़ी यौमिन काना मिक़्दारुहू अल्फ़ सनतिम्-मिम्मा त'उद्दून** — वो मामला आसमान से ज़मीन तक **चलाता** है; फिर वो उस की तरफ़ एक ऐसे दिन में **चढ़ता** है जिसकी मिक़्दार **हज़ार साल** है उस हिसाब से जो तुम गिनते हो।'

बेटा, लफ़्ज़ '**युदब्बिर**' ग़ौर कीजिए — वो इंतेज़ाम करता, चलाता, हिदायत देता है। **कायनात अपने ख़ुद के ज़ोर पर नहीं चल रही; इसे, मुसलसल, उसका मालिक चला रहा है।**

'**ज़ालिक 'आलिमुल्-ग़ैबि वश्-शहादतिल्-'अज़ीज़ुर्-रहीम** — यही ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला, ग़ालिब, रहीम है।'

और फिर, बेटा, तख़्लीक़ के बारे में एक आयत जिसे आपको अगली बार किसी भी चीज़ को देखते वक़्त पढ़ना चाहिए:

'**अल्लज़ी अह्सन कुल्ल शै-इन ख़लक़ह — वो जिसने हर चीज़ को जो बनाया उसे बेहतरीन बनाया।**'

बेटा, '**अह्सन**' — उसने इसे ख़ूबसूरती से बनाया, उम्दा, अपने मक़्सद के लिए ठीक ठीक। सिर्फ़ काम-चलाऊ नहीं — **अच्छी तरह बना।**

एक पत्ते को देखिए: उसकी रगें, उसकी शक्ल, जिस तरह वो रौशनी की तरफ़ मुड़ता है। एक परिंदे के पर को देखिए, एक कीड़े की आँख, बर्फ़ का एक फाहा, एक सीप के अंदर। उस में से कोई तफ़्सील महज़ ज़िंदा रहने के लिए ज़रूरी न थी। **ये अच्छी तरह बनाया गया क्योंकि बनाने वाला मुह्सिन है।**

और बेटा, इसे अपने आप पर लगाइए। आपका हर हिस्सा 'अह्सन' बनाया गया — उस चीज़ के लिए सब से मुनासिब जिसके लिए वो है। आप अपने जिस्म या अपने हालात के बारे में जो भी ना-पसंद करते हों, ये आयत याद रखने लायक़ है: **जिसने इसे बनाया वो चीज़ें बुरा नहीं बनाता।**

'**व बद-अ ख़ल्क़ल्-इंसानि मिन तीन** — और उसने इंसान की तख़्लीक़ **मिट्टी** से

शुरू की — **सुम्म ज'अल नस्लहू मिन सुलालतिम्-मिम्-मा-इम्-महीन** — फिर उसकी नस्ल एक **हक़ीर, बे-हैसियत पानी** के **निचोड़** से बनाई — **सुम्म सव्वाहु व नफ़ख़ फ़ीहि मिर्-रूहिह** — **फिर उसे ठीक किया और उस में अपनी रूह से फूँका** — **व ज'अल लकुमुस्-सम्'अ वल्-अब्सार वल्-अफ़्इदह** — और तुम्हारे लिए **कान, आँखें** और **दिल** बनाए — **क़लीलम्-मा तश्कुरून** — **तुम कम ही शुक्र करते हो।**'

बेटा, आप जो हैं उसके दो हिस्से देखिए। आपका जिस्म: मिट्टी से, और फिर एक ऐसे पानी से जिसे आयत ख़ुद बे-हैसियत कहती है। आपकी रूह: उस से फूँकी गई।

इसी लिए एक इंसान एक जानवर से नीचे गिर सकता है या फ़रिश्तों से ऊपर उठ सकता है। **आपके अंदर दो अस्ल हैं, और हर रोज़ आप उन में से एक को दूसरे से ज़्यादा खिलाते हैं।**

वो पहलू जो बिस्तरों को छोड़ देते हैं

फिर सूरह मग़्फ़ूर का मोमिनीन से मुक़ाबला करती है — और बेटा, यहाँ मोमिनीन का बयान क़ुरआन के सब से ख़ूबसूरत बयानों में से एक है।

'**इन्नमा युअ्मिनु बि-आयातिनल्-लज़ीन इज़ा ज़ुक्किरू बिहा ख़र्रू सुज्जदा** — हमारी आयतों पर सिर्फ़ वही ईमान लाते हैं जो, **जब उनसे नसीहत की जाए, सजदे में गिर जाते हैं** — **व सब्बहू बि-हम्दि रब्बिहिम व हुम ला यस्तक्बिरून** — और अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं, **और वो ग़ुरूर नहीं करते।**'

बेटा, ये इस सूरह की सजदे की आयत है — और ये उन लोगों को बयान करती है जिनकी नसीहत पर response एक बहस नहीं, एक ताख़ीर नहीं, बल्कि **उनकी पेशानी ज़मीन पर** है।

और फिर: '**ततजाफ़ा जुनूबुहुम 'अनिल्-मज़ाजि'इ** — **उनके पहलू उनके बिस्तरों से जुदा हो जाते हैं** — **यद्'ऊन रब्बहुम ख़ौफ़न्-व तम'आ** — अपने रब को **ख़ौफ़ और उम्मीद** से **पुकारते** हुए — **व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून** — और जो हमने उन्हें दिया उस में से **ख़र्च** करते हैं।'

बेटा, अल्फ़ाज़ का मज़ा लीजिए: 'ततजाफ़ा जुनूबुहुम 'अनिल्-मज़ाजि'' — उनके

पहलू उनकी सोई जगहों से खिंच जाते हैं। अरबी जिस्म की ना-गवारी और इरादे के ग़लबे की तस्वीर खींचती है: गर्म बिस्तर पकड़े रखता, और मोमिन ख़ुद को उस से उठाता।

ये तहज्जुद है, बेटा — रात की नमाज़। और ग़ौर कीजिए अल्लाह इसे कैसे बयान करते हैं: किसी हीरोइक कारनामे के तौर पर नहीं, बल्कि **एक छोटी, जिस्मानी जद्दो-जहद के तौर पर जो अंधेरे में दोहराई जाती, जिसे कोई नहीं देखता।**

और वो दो फिर ग़ौर कीजिए: 'ख़ौफ़व्-व तम'आ' — ख़ौफ़ **और** उम्मीद, दोनों उसी नमाज़ में मौजूद। अकेला ख़ौफ़ मायूसी पैदा करता है; अकेली उम्मीद ला-परवाही। मिला कर वो एक ऐसा शख़्स बनाते हैं जो रात को खड़ा हो।

और फिर, बेटा, वो अज्र — और ये क़ुरआन की सब से लुभाने वाली आयतों में से एक है:

'**फ़-ला तअ्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़िय लहुम्-मिन क़ुर्रीति अअ्युन** — **तो कोई जान नहीं जानती उनके लिए आँखों की कैसी ठंडक छुपा कर रखी गई** — **जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्मलून** — उस का **बदला** जो वो करते थे।'

बेटा, 'मा उख़्फ़िय लहुम' — जो उनके लिए **छुपाया** गया। अल्लाह इस अज्र का बयान नहीं करते। वो आपको सिर्फ़ इतना बताते हैं कि ये मौजूद है, कि ये छुपा हुआ है, और कि कोई जान इसे नहीं जानती।

और 'क़ुर्रीति अअ्युन' — लफ़्ज़ी तौर पर '**आँखों की ठंडक**'। बेटा, अरब इस मुहावरे को सब से गहरी ख़ुशी के लिए इस्तेमाल करते थे, क्योंकि कहा जाता था कि ग़म के आँसू गर्म और ख़ुशी के ठंडे होते हैं। तो: एक ऐसी चीज़ जो आपकी आँखें ठहरा देगी, उन्हें ठंडा करेगी, और उन्हें किसी और चीज़ की तलाश से रोक देगी।

और एक हदीस-ए-क़ुद्सी में, अल्लाह फ़रमाते हैं: मैंने अपने नेक बंदों के लिए वो तैयार किया है जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, और जो कभी किसी इंसान के ज़ेहन में नहीं आया। और अबू हुरैरह (रज़ि0) ने बढ़ाया: चाहो तो पढ़ो — 'फ़-ला तअ्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़िय लहुम्-मिन क़ुर्रीति अअ्युन'।

बेटा, सोचिए ये ख़ास अज्र **इस** ख़ास अमल से क्यों जुड़ा है। रात की नमाज़ सब से छुपी हुई इबादत है — कोई तुम्हें उठते नहीं देखता; कोई इसके लिए तुम्हारी तारीफ़ नहीं करता। तो अज्र भी छुपा है। **पोशीदा अमल, पोशीदा अज्र।** यही इसका इंसाफ़ और इसकी नाज़ुकी है।

'**अ फ़-मन काना मुअ्मिनन क-मन काना फ़ासिक़ा — क्या वो जो मोमिन है उस जैसा है जो ना-फ़रमान है? ला यस्तवून — वो बराबर नहीं।**'

क़रीबी अज़ाब

फिर सूरह मुंकिरों को क़ियामत के दिन दिखाती है: '**व लौ तरा इज़िल्-मुज्रिमून नाकिसू रुऊसिहिम 'इन्द रब्बिहिम** — और काश तुम देखते जब मुजरिम अपने रब के सामने अपने **सर झुकाए** होंगे — **रब्बना अब्सरना व समिअ्ना फ़र्जिंअ्ना नअ्मल सालिहन इन्ना मूक़िनून** — ऐ हमारे रब, **हमने देख लिया और सुन लिया**, तो हमें **वापस** भेज दे; हम नेक अमल करेंगे। **बेशक, अब हम यक़ीन रखते हैं।**'

बेटा, 'अब्सरना व समिअ्ना' — **अब** हम देखते हैं, **अब** हम सुनते हैं। वही सलाहियतें जो सारा वक़्त हाज़िर थीं, आख़िर-कार इस्तेमाल हुईं — बहुत देर से।

और फिर, बेटा, एक बेहद रहमत वाली आयत जिसे ज़्यादा तर लोग एक तंबीह समझ कर पढ़ते हैं: '**व ल-नुज़ीक़न्नहुम्-मिनल्-'अज़ाबिल्-अद्ना दूनल्-'अज़ाबिल्-अक्बरि ल'अल्लहुम यर्जिंऊन** — और **हम उन्हें बड़े अज़ाब से पहले क़रीबी अज़ाब ज़रूर चखाएँगे — ताकि शायद वो लौट आएँ।**'

बेटा, इसे देखिए। 'अल-'अज़ाबिल-अद्ना' — **क़रीबी** अज़ाब: इस दुनिया की मुश्किलें, नुक़सान, बीमारियाँ, धक्के। और इनकी दी गई ग़ायत क्या है? 'ल'अल्लहुम यर्जिंऊन' — **ताकि वो वापस आ जाएँ।**

तो इस ज़िंदगी की कोई मुश्किल रहमत से भेजा गया एक छोटा अलार्म हो सकता है — कंधे पर एक थपकी, किसी बहुत बड़ी गिरावट को रोकने के लिए। बेटा, **अक़्लमंद शख़्स अलार्म पहली बार सुन लेता है।**

'**व मन अज़्लमु मिम्मन ज़ुक्किर बि-आयाति रब्बिही सुम्म अअ्रज़ 'अन्हा** — और

उस से ज़्यादा **ज़ालिम** कौन जिसे उसके रब की आयतों से **नसीहत** की जाए फिर वो उन से **मुँह मोड़** ले? **इन्ना मिनल्-मुज्रिमीन मुन्तक़िमून** — बेशक, हम मुजरिमों से बदला लेंगे।'

बेटा, ग़ौर कीजिए यहाँ 'सब से ज़्यादा ज़ालिम' का लक़ब क्या कमाता है: क़त्ल नहीं, चोरी नहीं — **नसीहत दिए जाने पर मुँह मोड़ना।** क्योंकि नसीहत के बाद, हर चीज़ एक चुनाव है।

सब्र से बने लीडर

फिर सूरह मूसा (अलैहि0) और बनी इस्राईल का ज़िक्र करती है — और बेटा, यहाँ एक आयत है जो समझाती है कि अल्लाह कैसे लीडर बनाते हैं:

'व ज'अल्ना मिन्हुम अइम्मतंय्यह्दून बि-अम्रिना लम्मा सबरू व कानू बि-आयातिना यूक़िनून — और हमने उन में ऐसे लीडर बनाए जो हमारे हुक्म से हिदायत देते थे — जब उन्होंने सब्र किया और हमारी निशानियों पर यक़ीन रखते थे।'

बेटा, अल्लाह के नज़दीक क़ियादत की दो शर्तें देखिए: **सब्र और यक़ीन।** सब्र, और यक़ीन।

चुमक-दार शख़्सियत (charisma) नहीं। ताल्लुक़ात नहीं। फ़सीह-ज़ुबानी नहीं, दौलत नहीं, ख़ानदानी नाम नहीं। कुछ सलफ़ ने कहा: सब्र और यक़ीन के साथ, दीन में क़ियादत हासिल होती है।

और लफ़्ज़ '**लम्मा**' ग़ौर कीजिए — **जब** उन्होंने सब्र किया। क़ियादत ठीक उस मुक़ाम पर **दी** गई जब सब्र साबित हो गया। बेटा, **अल्लाह ज़िम्मेदारी अन-आज़माए हुए को नहीं सौंपते। जो कुछ आप अभी ख़ामोशी से सह रहे हैं वो शायद उस चीज़ की क़ाबिलियत हो जो आपको अभी दी नहीं गई।**

'इन्न रब्बक हुव यफ़्सिलु बैनहुम यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून — बेशक, तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके दरमियान उस चीज़ में फ़ैसला करेगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ करते थे।'

बंजर ज़मीन को पानी

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, खेती-बाड़ी से ली गई एक तस्वीर से — और ये सूरह की आख़िरी दलील उठाए हुए है।

'**अ व लम यरौ अन्ना नसूक़ुल्-मा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि** — क्या वो नहीं देखते कि **हम बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी ले जाते** हैं — **फ़-नुख़्रिजु बिही ज़र्अन तअ्कुलु मिन्हु अन्'आमुहुम व अन्फ़ुसुहुम** — और उस से **खेती** निकालते हैं जिस में से उनके मवेशी और वो ख़ुद **खाते** हैं? **अ फ़-ला युब्सिरून** — **तो क्या वो देखते नहीं?**'

बेटा, 'अल-अर्ज़िल-जुरुज़' — वो ज़मीन जो सूखी, नंगी, हर चीज़ से महरूम हो। और अल्लाह कहते हैं: हम उस की तरफ़ पानी **ले जाते** हैं। फ़ेल ग़ौर कीजिए: '**नसूक़**' — हम ले जाते हैं, उसे हाँकते हैं, जिस तरह एक चरवाहा अपने रेवड़ को हाँकता है। **बारिश इत्तेफ़ाक़न सूखी ज़मीन तक नहीं भटकती; उसे वहाँ हाँका जाता है।**

और फिर उस बे-जान ज़मीन से जानवरों और लोगों के लिए खाना निकलता है।

बेटा, इसे ज़ाती तौर पर लीजिए, क्योंकि ये ज़ाती मुराद है। हर ज़िंदगी में सूखे टुकड़े होते हैं — एक दिल जो सख़्त हो गया, एक मौसम जिसमें कोई उमंग नहीं, एक अर्से के साल जिनमें कुछ उगता नहीं लगता, एक शख़्स जिस से आप उम्मीद छोड़ चुके। और ये आयत कहती है: **अल्लाह बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी ले जाते हैं, और वो खाना उगाती है।**

कोई चीज़ उन के लिए ज़िंदा करने के लिए बहुत मुर्दा नहीं। न ज़मीन, न कोई दिल, न कोई ख़ानदान, न आप।

'**व यक़ूलून मता हाज़ल्-फ़त्हु इन कुन्तुम सादिक़ीन** — और वो कहते हैं: **ये फ़ैसला कब** होगा, अगर तुम सच्चे हो? **क़ुल यौमल्-फ़त्हि ला यन्फ़'उल्-लज़ीन कफ़रू ईमानुहुम व ला हुम युन्ज़रून** — कहो: **फ़ैसले** के दिन, जिन्होंने कुफ़्र किया उनका ईमान उनके **काम न आएगा**, न उन्हें **मोहलत** दी जाएगी।'

'**फ़-अ्रिज़ 'अन्हुम वन्तज़िर इन्नहुम मुन्तज़िरून** — तो उन से मुँह मोड़ लो और **इंतेज़ार** करो; बेशक, **वो भी इंतेज़ार** कर रहे हैं।'

बेटा, सूरह दोनों फ़रीक़ों के इंतेज़ार पर ख़त्म होती है। और उनके दरमियान फ़र्क़ इंतेज़ार में नहीं — **ये उस में है कि उन्होंने इंतेज़ार करते हुए अपनी रातों का क्या किया।** एक गिरोह के पहलू अपने बिस्तरों से जुदा हुए। दूसरे गिरोह के नहीं।

और यही, बेटा, वजह है कि नबी ﷺ हर जुमा की फ़ज्र की नमाज़ में सूरह अस-सजदह पढ़ा करते थे: ताकि उम्मत, हफ़्ते-दर-हफ़्ते, उन लोगों के बारे में सुने जो अंधेरे में उठते हैं और उस अज्र के बारे में जो किसी आँख ने नहीं देखा।

इस सूरह से क्या सीखा

1. 'उसने हर चीज़ को जो बनाया उसे बेहतरीन बनाया' — आप के बारे में कुछ भी ला-परवाही से नहीं बनाया गया।

2. तुम मिट्टी और एक फूँकी गई रूह हो: हर रोज़ तुम उन दो में से एक को दूसरे से ज़्यादा खिलाते हो।

3. नसीहत पर मोमिन का जवाब सजदा है, बहस नहीं।

4. तहज्जुद एक छोटी जिस्मानी जद्दो-जहद के तौर पर बयान हुआ — पहलू गर्म बिस्तर से खींचते हुए।

5. पोशीदा अमल पोशीदा अज्र कमाते हैं: जो किसी आँख ने नहीं देखा वो उन के लिए रखा है जो रात को उठते हैं।

6. दुनियावी मुश्किल 'क़रीबी अज़ाब' हो सकती है जो भेजा गया ताकि तुम लौट आओ — अलार्म पहली बार सुन लो।

7. क़ियादत उस मुक़ाम पर दी जाती है जहाँ सब्र और यक़ीन साबित हों — और वो बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी ले जाते हैं, तो कोई चीज़ ज़िंदा करने से परे नहीं।

या अल्लाह, हमारे पहलू हमारे बिस्तरों से उठाइए, जो हम अंधेरे में करें उसे क़ुबूल कीजिए, और हमारे दिलों को वैसे ज़िंदा कीजिए जैसे आप मुर्दा ज़मीन को करते हैं। आमीन।